48

क्या परमेश्वर पापियों को त्याग देता है

(11:1-12)

अध्याय 10 में पौलुस ने अधिकतर यहूदियों की आत्मिक स्थिति पर स्पष्टता से बात की। 1 और 2 आयतों में उसने कहा, ''हे भाइयो, मेरे मन की अभिलाषा और उन के लिए परमेश्वर से मेरी प्रार्थना है, कि वे उद्धार पाएं। क्योंकि मैं उन की गवाही देता हूं, कि उन को परमेश्वर के लिए धुन रहती है, परन्तु बुद्धिमानी के साथ नहीं।'' उसने ज़ोर दिया कि ''यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा'' (आयत 9)। अधिकतर यहूदी यीशु में विश्वास *नहीं* करते थे जिस कारण उन्होंने उसका अंगीकार करने से इनकार कर दिया। अध्याय की समाप्ति यहूदियों का विवरण ''आज्ञा न मानने वाली और विवाद करने वाली प्रजा'' के रूप में करते हुए यशायाह के उद्धरण से होता है (आयत 21)। क्या पौलुस यह कह रहा था कि परमेश्वर ने यहूदियों को त्याग दिया है, अर्थात अब उसकी उन लोगों में कोई दिलचस्पी नहीं थी जो किसी समय उसकी वाचा के लोग थे? अध्याय 11 में इस प्रश्न का उत्तर दिया गया है।

परन्तु इस प्रश्न के प्रभाव रोमियों 9-11 में चर्चा के अधीन परिस्थिति से कहीं बढ़कर हैं। लोग आज भी खोए हुए हैं। कइयों में जुनून तो है, परन्तु बुद्धिमानी से नहीं। कइयों को विश्वास नहीं है और वे अंगीकार नहीं कर पाते। ''आज्ञा न मानने वाले'' और ''विवाद करने वाले'' शब्दों का इस्तेमाल आज भी हमारे पापपूर्ण संसार पर लागू होता है। क्या परमेश्वर ने आज पापियों को त्याग दिया है? क्या परमेश्वर ने आप के किसी मित्र, परिवार के किसी व्यक्ति या पड़ोसियों को त्याग दिया है? क्या परमेश्वर ने *आप* को त्याग दिया है? इन प्रश्नों के प्रभाव अनन्तकालिक हैं।

यहूदियों का ठुकराना सम्पूर्ण नहीं (11:1-10)

पौलुस ने ऐसे प्रश्न के साथ आरम्भ किया, जिसमें भजन संहिता 94:14 के शब्द सुनाई देते हैं।[1] ''इसलिए मैं कहता हूं, क्या परमेश्वर ने अपनी प्रजा को त्याग दिया?'' (रोमियों 11:1क)। सदर्भ में ''अपनी प्रजा'' इस्राएलियों को कहा गया है। पौलुस एक चौंकाने वाले ''कदापि नहीं!'' के साथ आगे बढ़ा (आयत 1ख)। आयत 2 में उसने कहा कि ''परमेश्वर ने अपनी उस प्रजा को *नहीं* त्यागा, जिसने उसे पहले से ही जाना।''

पौलुस ने पुष्टि की कि परमेश्वर ने इस्राएलियों को नकारा नहीं था, परन्तु अध्याय में आगे उसने अपने ''कुटुंबियों'' की बात करते हुए ''उनका त्याग दिया जाना'' बताया (आयतें 14, 15)। दोनों दावे निश्चित रूप से परस्पर विरोधी लगते हैं: परमेश्वर ने इस्राएलियों को ठुकराया *नहीं था*। ... परमेश्वर ने इस्राएलियों को ठुकरा दिया था। हम इन दोनों विचारों को कैसे मिला सकते हैं? 9:6 प्रेरित की बात में वापस जाएं: ''इसलिए कि जो इस्राएल के वंश हैं, वे सब इस्राएली नहीं।'' उस चार्ट को याद रखें जिसमें बड़े चक्कर के बीच में छोटा चक्कर दिखाया गया है:

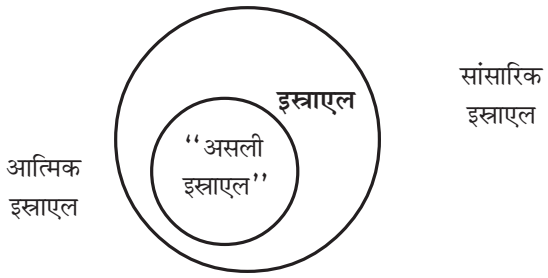

परमेश्वर ने अधिकतर इस्राएलियों (बड़ा चक्र) को ठुकरा दिया था, परन्तु उसने उन यहूदियों को *नहीं* ठुकराया था, जिन्होंने यीशु पर विश्वास किया (छोटा चक्र)। अध्याय 11 में आगे बढ़ते हुए इस अन्तर को ध्यान में रखें। इस अध्याय में यीशु को ग्रहण कर लेने वाले यहूदियों को परमेश्वर की ''प्रजा'' (आयत 1), अर्थात ''जिसे उसने पहले ही से जाना'' (आयत 2) और ''चुने हुओं'' (आयत 7) के रूप में बताया गया है।

प्रमाण (आयतें 1ग, 2क)

इस प्रमाण के रूप में कि परमेश्वर ने इस्राएली जाति को नहीं ठुकराया था, पौलुस ने अपनी ओर इशारा किया:[2] ''मैं भी तो इस्राएली हूं: अब्राहम के वंश और बिन्यामीन के गोत्र में से हूं'' (आयत 1ग; तुलना फिलिप्पियों 3:5)। पौलुस ''इस्राएल के भीतर इस्राएल'' का भाग था जो वे होंने यीशु को मसीहा मान लिया था।

स एक यहूदी था जिसे परमेश्वर द्वारा ग्रहण कर लिया गया था इसलिए वह निष्कर्ष किता था, ''परमेश्वर ने अपनी उस प्रजा को नहीं त्यागा, जिसे उस ने पहिले ही से जाना'' (आयत 2क)। जैसा कि पीछे चर्चा हुई है, परमेश्वर का पूर्व ज्ञान मनुष्यजाति की स्वतन्त्र इच्छा को नकारता नहीं है।[3] वे लोग जिन्हें परमेश्वर ''पहिले ही से जानता है'' वे हैं जो विश्वास के द्वारा (रोमियों 1:16) सुसमाचार की बुलाहट का जवाब देते हैं (2 थिस्सलुनीकियों 2:14) और इसलिए धर्मी ठहराए जाते हैं (रोमियों 5:1)। परमेश्वर ने इन योग्यताओं वाले किसी यहूदी को नहीं ठुकराया था।

एक समानांतर (आयतें 2ख-4)

अधिकतर यहूदियों ने उन योग्यताओं को पूरा *नहीं* किया था, परन्तु यह आश्चर्यजनक नहीं होना चाहिए था क्योंकि इस्राएल के पूरे इतिहास में, यहूदी जाति के केवल एक भाग ने वास्तव में परमेश्वर की बात मानी थी। पुराने नियम की एक प्रसिद्ध कहानी में यही हुआ था।

> क्या तुम नहीं जानते,[4] कि पवित्र शास्त्र एलिय्याह की कथा में क्या कहता है;[5] कि वह इस्राएल के विरोध में परमेश्वर से बिनती करता है। कि हे प्रभु, उन्होंने तेरे भविष्यवक्ताओं को घात किया, और तेरी वेदियों को ढहा दिया है;[6] और मैं ही अकेला बच रहा हूं, और वे मेरे प्राण के भी खोजी हैं (आयतें 2ख, 3)।

आपको एलिय्याह के शब्दों की पृष्ठभूमि याद होगी।[7] इस नबी ने कर्मेल पहाड़ पर बाल के नबियों पर विजय पाई थी[8] (1 राजाओं 18)। शायद उसे उम्मीद थी कि इस विजय से देश में नई जागृति आ जाएगी। इसके बजाय रानी इजेबेल ने उसे मरवा डालना चाहा और उसे भागकर अपनी जान बचानी पड़ी थी (19:1-8)। अकेले और निराश उसने प्रभु के सामने अपना रोना रोया: ''इस्राएलियों ने तेरी वाचा टाल दी, तेरी वेदियों को गिरा दिया, और तेरे नबियों को तलवार से घात किया है, और मैं ही अकेला रह गया हूं; और वे मेरे प्राणों के भी खोजी हैं'' (1 राजाओं 19:10; आयत 14 भी देखें)। एलिय्याह को लगा था कि विश्वासयोग्य इस्राएल मिट जाने के कगार पर है।

मैं इस बात के लिए धन्यवाद देता हूं कि यह कहानी का अन्त नहीं था। पौलुस ने आगे कहा, ''परन्तु परमेश्वर से उसे [एलिय्याह] क्या उत्तर मिला कि मैंने अपने लिए सात हजार पुरुषों को रख छोड़ा है जिन्होंने बाल के आगे घुटने नहीं टेके हैं[9]'' (रोमियों 11:4; देखें 1 राजाओं 19:18)। प्रभु के शब्दों से दो प्रासंगिकताएं बनाई जा सकती हैं। पहली यह कि सात हज़ार लोग इस्राएल की जनसंख्या का केवल छोटा सा भाग थे।[10] सात हज़ार लोगों को ''इस्राएल के भीतर इस्राएल'' के रूप में माना जा सकता है। क्योंकि इस्राएल जाति का एक छोटा सा भाग एलिय्याह के समय में ''असली इस्राएल'' था, यहूदियों को इस बात से आश्चर्य नहीं होना चाहिए था कि पौलुस के समय में भी ऐसा ही था।

परन्तु रोमियों 11 की पौलुस की मुख्य प्रासंगिकता यह थी कि *कम* गिनती होने के बावजूद सात हज़ार लोग एक महत्वपूर्ण *संख्या* है। यदि हम उन सात हज़ार संख्या में पत्नियां और बच्चों को मिला लें तो कुल गिनती बीस हज़ार से अधिक हो सकती है। यह संख्या उससे *कहीं* अधिक थी जो एलिय्याह के मन में थी। पौलुस के समय में अधिकतर यहूदियों के परमेश्वर द्वारा ठुकराए जाने के बावजूद, काफ़ी संख्या में लोगों को ठुकराया नहीं गया था। तीन हज़ार यहूदियों को पिन्तेकुस्त के दिन बपतिस्मा दिया गया था और उनका उद्धार हुआ था (प्रेरितों 2:5, 37, 38, 41, 47)। यरूशलेम में यहूदी मसीही लोगों की संख्या तब तक बढ़ती रही, जब तक वे लाखों की संख्या नहीं हो गई (देखें प्रेरितों 2:47; 4:4; 5:14)। कलीसिया के यरूशलेम से बिखर जाने के बाद (प्रेरितों 8:1, 4) यहूदी लोग जगह- जगह सुसमाचार के संदेश का सकारात्मक उत्तर देने लगे (देखें प्रेरितों 14:1; 17:1-4, 10-12)। जब अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा के अन्त में पौलुस यरूशलेम से लौटा, तो उस कलीसिया के अगुओं ने ''... यहूदियों में से कई हजार ने विश्वास किया है;[11] ...'' (प्रेरितों 21:20)। ये ''हज़ारों'' लोग इस बात का सबूत हैं कि परमेश्वर ने इस्राएल को ठुकराया नहीं था। विशेषकर परमेश्वर ने इस्राएल जाति के उन लोगों को (बड़ा चक्र) नहीं ठुकराया था जो ''उसकी प्रजा'' (छोटा चक्र) थे।

एक नियम (आयतें 5, 6)

एलिय्याह के समय से एक समानांतर रेखा खींचने के बाद, पौलुस ने आगे कहा, ''सो इसी रीति से इस समय भी, अनुग्रह से चुने हुए कितने लोग बाकी हैं'' (रोमियों 11:5)। ''बाकी'' का अनुवाद *leimma* से किया गया है, जिसका अर्थ है ''जो बचा रह गया है।'' (*Leimma* का सम्बन्ध *leipo* अर्थात छोड़ना से है।[12]) यिर्मयाह 42:2 में ''बचे हुओं'' का इस्तेमाल ''बहुत से लोगों में से कुछ एक'' के लिए किया गया है। रोमियों की पुस्तक में पहले पौलुस ने यशायाह से

उद्धृत किया था: ''चाहे इस्राएल की सन्तानों की गिनती समुद्र के बालू के बराबर हो, तौभी उन में से थोड़े[13] ही बचेंगे'' (9:27)। यह पहले ही बताया गया था कि ''बहुतों में से कुछ एक'' इस्राएली ही बचाए जाएंगे (बड़े चक्र के अंदर छोटा चक्र)।

क्या इसका अर्थ यह है कि बचे हुए लोगों ने कुछ ऐसा किया था, जिससे उनके गुणों के कारण परमेश्वर ने उनका पक्ष लिया? पौलुस यह स्पष्ट कर देना चाहता था कि उनका स्वीकार किया जाना व्यक्तिगत गुण या प्राप्ति के कारण नहीं है, बल्कि यह परमेश्वर की करुणा और अनुग्रह का दिखाया जाना था यानी यह ''परमेश्वर की अनुग्रहकारी पसन्द के अनुसार'' था।

''परमेश्वर की अनुग्रहकारी पसन्द'' कहने के बाद पौलुस ने अनुग्रह से उद्धार के प्रबन्ध तथा कर्मों के आधार पर उद्धार के प्रबन्ध के अन्तर पर ज़बर्दस्त वाक्य दिया: ''यदि यह [परमेश्वर की पसन्द] अनुग्रह से हुआ है, तो फिर कर्मों से नहीं; नहीं तो अनुग्रह फिर अनुग्रह नहीं रहा'' (11:6)। अनुग्रह से उद्धार की अवधारणा कर्मों के आधार पर उद्धार की अवधारणा से मेल नहीं खाती। यह कहना कि परमेश्वर हमें अपने *अनुग्रह* के द्वारा बचाता है क्योंकि हम ने जो कुछ किया है उसके द्वारा अपना *उद्धार* कमाया है बेतुकी बात होगी। कोई कह सकता है, ''मैं गंदा होकर साफ़ हुआ हूं'' या ''भूमि पर रहकर पक्षी हवा में ऊंचाई तक उड़ा'' यह कहना कि हमारा उद्धार अपने कर्मों के आधार पर कर्मों से हुआ है ''अनुग्रह'' शब्द के अर्थ को कम करना है। फिर तो अनुग्रह को ''अनुग्रह'' नहीं कहा जाएगा।

5 और 6 आयतें छोड़ने से पहले मुझे ''बचे हुओं'' शब्द पर कुछ और अवलोकन करने चाहिए। बाइबल ने हमेशा *बचे हुओं* (छोटा भाग) के आधार की बात ही सिखाई है।[14] नूह के समय में, पृथ्वी के रहने वाले हज़ारों लोगों में केवल आठ (थोड़ी सी गिनती, बचे हुए लोग) ही बचाए गए थे (1 पतरस 3:20)। सदूम और अमोरा के विनाश के समय केवल लूत और उसकी दो बेटियां (कुछ ही, बचे हुए लोग) बचाए गए थे (उत्पत्ति 19:15-26)। यहूदियों को दासता में ले जाने के बाद, केवल बचे हुए लोग ही वापस आए थे (देखें यशायाह 10:21)। नये नियम में यीशु ने पहले से बता दिया कि बहुत से लोगों का नाश होगा जबकि केवल कुछ ही (बचे हुओं) का उद्धार होगा (मत्ती 7:13, 14)। प्रकाशितवाक्य में परमेश्वर के लोगों को ''शेष[15] ... जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते'' के रूप में दिखाया गया है (12:17; KJV)। अध्याय 11 पर आगे के सबक में, कुछ आयतों को समझने की कोशिश करते हुए हमें इस महत्वपूर्ण सच्चाई को ध्यान में रखना चाहिए कि केवल *बचे हुओं* का ही उद्धार होगा। यह हमेशा से सही है और सही रहेगी।

कारण (आयतें 7-10)

इस्राएल के केवल बचे हुओं का उद्धार ही *क्यों* होना था। 7 से 10 आयतों में पौलुस द्वारा यही प्रश्न पूछा गया है। यह पूछने के बाद कि ''परिणाम क्या हुआ?'' उसने कहा, ''यह कि इस्राएली जिस की खोज में हैं, वह उन को नहीं मिला'' (आयत 7क)। पौलुस ने पहले कहा था कि इस्राएलियों ने धार्मिकता (परमेश्वर के साथ सही खड़े होना) की खोज की थी परन्तु वे अपना लक्ष्य पाने में नाकाम रहे थे। ''इसलिए कि वे विश्वास से नहीं, परन्तु मानो कर्मों से उसकी खोज करते थे'' (9:31, 32)। यह मुख्यतया वही बात है जो 11:7 में कह रहा था: ''इस्राएली जिस

की खोज में है [यानी परमेश्वर के साथ सही खड़े होना], वह उन को नहीं मिला।''

परन्तु *कुछ* इस्राएलियों ने वह पा लिया, जिसे वे पाना चाहते थे: ''परन्तु चुने हुओं को मिला'' (आयत 7ख)। ये लोग ''असली इस्राएल'' (बड़े चक्र के अन्दर छोटा चक्र) थे। इन्होंने परमेश्वर के साथ सही खड़े होना पा लिया, क्योंकि इन्होंने यीशु में ''विश्वास से खोज'' की।

तो फिर अधिकतर इस्राएलियों का क्या हुआ था? हम पढ़ते हैं, ''शेष लोग कठोर किए गए हैं'' (आयत 7ग)। ''कठोर किए गए'' का अनुवाद *poroo* से किया गया है जिसका अर्थ है ''कठोर बनाना'' या ''संवेदनहीन करना।''[16] अध्याय 9 में पौलुस ने घोषणा की कि परमेश्वर ''जिसे चाहता है उसे कठोर कर देता है'' (आयत 18) और फिर उदाहरण के रूप में फिरौन का इस्तेमाल किया[17] (आयत 17)। अध्याय 9 का अध्ययन करते हुए आपने देखा था कि बाइबल कभी नहीं कहती कि परमेश्वर किसी को जिसने पहले से ही अपने मन को कठोर न किया हो, कठोर करता है।[18] इस्राएलियों की समस्या (बड़ा चक्र) यह थी कि वे विद्रोही, न मानने वाले मन वाले लोग थे (देखें मत्ती 13:15; प्रेरितों 28:27)।

परिणामस्वरूप परमेश्वर ने अपनी बात का समर्थन वचन के साथ किया। उसका पहला हवाला पुराने नियम के वचनों, व्यवस्थाविवरण 29:4 और यशायाह 29:10 को मिलाना था, ''जैसा लिखा है, कि परमेश्वर ने उन्हें आज के दिन तक भारी नींद में डाल रखा है और ऐसी आंखें दीं जो न देखें और ऐसे कान जो न सुनें'' (रोमियों 11:8)।

फिर पौलुस ने यीशु तथा आरम्भिक लोगों द्वारा ने आमतौर पर इस्तेमाल किए जाने वाले भजन, भजन संहिता 69 से उद्धृत किया (उदाहरण के लिए, देखें यूहन्ना 2:17; 15:25; प्रेरितों 1:20; रोमियों 15:3): ''और दाऊद कहता है; उन का भोजन उन के लिए जाल,[19] और फन्दा, और ठोकर, और दण्ड का कारण हो जाए। उनकी आंखों पर अंधेरा छा जाए ताकि न देखें, और तू सदा उनकी पीठ को झुकाए रखे'' (रोमियों 11:9, 10; देखें भजन संहिता 69:22, 23)। दाऊद ने परमेश्वर से अपने शत्रुओं के विरुद्ध कई कार्रवाइयां करने को कहा, परन्तु जो भाग सीधे तौर पर विचार की पौलुस की इस रेखा पर लागू होता है: ''उनकी आंखों पर अंधेरा छा जाए ताकि न देखें।'' इस्राएलियों (बड़ा चक्र) की ''आंखों'' पर ''अंधेरा छा गया'' था, क्योंकि अधिकतर यहूदियों ने परमेश्वर द्वारा दिए गए प्रमाण को ''देखने'' से इनकार कर दिया था कि यीशु ही वह मसीहा था जिसकी वे प्रतीक्षा कर रहे हैं।

यहूदियों का ठुकराया जाना अन्तिम नहीं (11:11, 12)

पौलुस ने पूछा था, ''क्या परमेश्वर ने अपनी प्रजा को त्याग दिया है?'' और एक अर्थ में उत्तर दिया था कि नहीं (आयत 1)। इस निष्कर्ष के समर्थन के लिए उसने पहले दिखाया कि यहूदियों को परमेश्वर द्वारा ठुकराया जाना *सम्पूर्ण* नहीं था। पौलुस तथा अन्य यहूदियों ने यीशु को ग्रहण किया था इसलिए परमेश्वर ने उन्हें ग्रहण किया था। उसका दूसरा प्रमाण था कि यहूदियों का परमेश्वर द्वारा ठुकराया जाना *अन्तिम* नहीं था। परमेश्वर उन तक मन फिराने और उसकी ओर वापस आने का अवसर ला रहा था। यह अध्याय 11 के शेष भाग का मुख्य विषय है। अब के लिए हम केवल अगली दो आयतों को देखेंगे, जिनमें उस विषय का परिचय है।

योजना (आयत 11)

पौलुस ने इस नये भाग का आरम्भ ''इसलिए मैं कहता हूं'' (आयत 11क) से किया। यह मान लेने के बाद कि इस्राएल जाति को परमेश्वर द्वारा स्वीकार नहीं किया गया था, वह एक अतिरिक्त विचार शामिल करना चाहता था: ''सो मैं कहता हूं क्या उन्होंने [यहूदियों ने] इसलिए ठोकर खाई, कि गिर पड़ें [*pipto*] से?'' (आयत 11क, ख)। एक बार फिर पौलुस ने अपने ही प्रश्न का उत्तर ''कदापि नहीं'' के साथ किया (आयत 11ग; आयत 1 भी देखें)।

फिर हमें एक स्पष्ट विरोध मिलता है। आयत 11 यह कहती प्रतीत होती है कि यहूदी लोग गिरे *नहीं* थे–परन्तु आगे बढ़ते रहे। 11 और 12 आयतें यहूदियों के ''अपराध'' और ''असफलता'' की बात करती हैं, जबकि आयत 15 उनके ठुकराए जाने की। फिर पौलुस ने कहा कि विश्वास न करने वाले यहूदियों को ''परमेश्वर ने न छोड़ा'' (आयतें 20, 21)। उसने निष्कर्ष निकाला, ''इसलिए परमेश्वर की ... कड़ाई को देख जो [यहूदी] *मारे गए* उस [*pipto* से] पर कड़ाई, ...'' (आयत 22)। यहूदी लोग गिरे *नहीं* बल्कि वे गिरे *थे*? स्पष्टतया आयत 11 का संकेत है कि यहूदी लोग जो यहूदी गिरे *नहीं* थे उन्हें किसी न किसी तरीके से सुधार की आवश्यकता है।

NIV में है ''क्या उन्होंने इसलिए ठोकर खाई कि ऐसे गिरें कि फिर न उठ सकें?'' यह इस वचन की बुरी व्याख्या नहीं है क्योंकि अध्याय का शेष भाग इस बात पर ज़ोर देता है कि यहूदियों के लिए आशा होनी थी *यदि* वे अविश्वास में बने न रहें। परन्तु 11 और 12 आयतों के प्रकाश में सुधार को प्राथमिकता देता हूं जो इस बात का संकेत है कि यहूदियों का गिरना *केवल* एक बात नहीं कि जब उन्होंने यीशु पर जो ''ठोकर का पत्थर'' है ठोकर खाई (9:32)। पौलुस ने यहूदी लोगों के गिरने का *अच्छा* परिणाम अन्यजातियों का मन परिवर्तन बताया।

पौलुस ने आगे कहा, ''परन्तु उन [यहूदियों] के गिरने के कारण अन्यजातियों को उद्धार मिला, कि उन्हें जलन हो'' (11:11घ)। जब पौलुस किसी नये नगर में पहुंचता था, तो वह पहले यहूदी आराधनालय में ही जाता था। जब यहूदी लोग उसे ठुकरा देते (जैसा कि स्पष्ट रूप से उन्होंने किया), तो वह अन्यजातियों के पास चला जाता (देखें प्रेरितों 13:46; 14:1; 18:6; 19:8, 9; 28:28)। इस प्रकार यहूदियों के अपराध (सुसमाचार को ठुकराने) से अन्यजातियों के लिए सुसमाचार को सुनने और इसे मानने का अवसर मिल गया। एक अनुवाद में है ''... जब वे [यहूदी लोग] बाहर चले गए, तो उन्होंने बाहर के लोगों [अन्यजातियों] के लिए भीतर आने के लिए दरवाजा खुला छोड़ दिया ...'' (MSG) यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि सुसमाचार को यहूदियों द्वारा ठुकराने से अन्यजातियों के पास सुसमाचार ले जाए जाने का *अवसर* मिला न कि कारण। पौलुस ने अन्यजातियों में प्रचार करना ही था चाहे यहूदी उसके संदेश को मान भी लेते।

परन्तु परमेश्वर ने घटनाओं के क्रम के अन्त में अन्यजातियों के मन परिवर्तन की इच्छा नहीं की। ध्यान दें कि पौलुस ने आगे क्या कहा: ''... अन्यजातियों को उद्धार मिला, कि उन्हें [यहूदियों को] जलन हो'' (आयत 11घ, ङ)। यह विचार कि अन्यजातियों का स्वीकार किया जाना यहूदियों को जलन दिलाएगा, 10:19 में पौलुस द्वारा बताया गया था: ''मैं उनके द्वारा जो जाति नहीं [यानी अन्यजाति],[20] तुम्हारे [यहूदियों के] मन में जलन उपजाऊंगा।''

''जलन'' शब्द कई पाठकों के लिए यहां इस्तेमाल किया जाने वाला अजीब शब्द लगता है। ''जलन'' का अनुवाद *parazeloo* से किया गया है जिसमें *zeloo* को *para* से गम्भीर बनाया

जाता है। *Zeloo* का मूल *zeo* है, जिसका अर्थ ''उबालना, गर्म होना'' है।[21] *Zeloo* का अर्थ ''ईर्ष्यालु होना'' या ''जलन रखने वाला होना''[22] (ईर्ष्यालु और जलन रखने वाला दोनों ही हमारे अन्दर ''गर्मी पैदा करते हैं'') हो सकता है। *Zeloo* और इससे जुड़े शब्दों को आम तौर पर बुरे अर्थों के लिए इस्तेमाल किया जाता है, उदहारण के लिए देखें 1 कुरिन्थियों 13:4, परन्तु हमेशा नहीं। पौलुस ने कुरिन्थियों को कहा, ''आत्मिक वरदानों की धुन में रहो [*zeloo* से]'' (1 कुरिन्थियों 14:1)।

रोमियों 10:19 तथा 11:11, 14 में ''जलन'' और ''ईर्ष्या'' शब्दों के बारे में, *तीव्र* इच्छा होने पर विचार करें।[23] पौलुस को उम्मीद थी कि यहूदी लोग जिन्होंने अन्यजातियों को मसीहा के राज्य (कलीसिया) के लाभ पाते देखा है वे ही उन्हीं आशिषों को पाने की *तीव्र इच्छा* से भर जाएंगे। उसे उम्मीद थी कि उनकी इच्छा इतनी मज़बूत होगी कि यह उनकी पूर्वधारणा को नकार देगी और यीशु के लिए उनके मनों को खोल देगी। घटनाओं की अपेक्षित घड़ी को इस प्रकार से रेखाचित्र के द्वारा दिखाया जा सकता है।

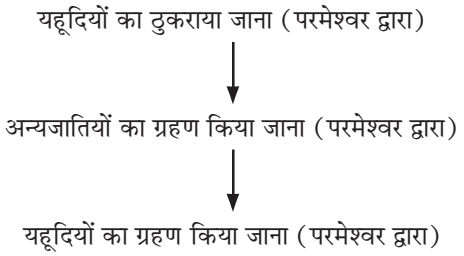

इस शृंखला को ध्यान में रखें। अध्याय 11 में पौलुस ने कई बार बताया कि परमेश्वर ने किस प्रकार इस शृंखला का इस्तेमाल यहूदियों में विश्वास पैदा करने के लिए किया। हमारा एक ऐसा परमेश्वर है, जो किसी बहुत बुरी बात से कोई बहुत अच्छी बात बना सकने में सक्षम है।

एक सम्भावना (आयत 12)

अपने साथी यहूदियों के उद्धार पाने की बात करते हुए पौलुस उत्तेजना से भर गया था। ''सो यदि उन [यहूदियों] का गिरना जगत के लिए [आत्मिक] धन और उन की [आत्मिक] घटी अन्यजातियों के लिए सम्पत्ति का कारण हुआ, तो उन [यहूदियों] की भरपूरी से क्या कुछ न [अन्यजातियों के लिए सम्पत्ति] होगा'' (आयत 11:12)।

एक पल के लिए हमें ''भरपूरी'' शब्द पर ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि यह अध्याय के अन्त में विवादास्पद भाग में एक निर्णायक शब्द है (देखें आयत 25)। ''भरपूरी'' शब्द *pleroma* से लिया गया है जो '' 'पूर्णता' का संकेत देता है।''[24] *Pleroma* का सम्बन्ध *pleres* (''पूरा, भरा हुआ'') और *pleroo* (''भरना, पूरा भरना'') से है। इन शब्दों का इस्तेमाल रोमियों की पुस्तक में आम तौर पर किया गया है (उदाहरण के लिए देखें 1:29; 8:4; 13:8, 10; 15:13, 14)। अभी के लिए जो प्रश्न हमें परेशान करता है वह यह है कि '' 11:12 में *pleroma* का क्या अर्थ है?'' इसका अर्थ पता लगाने का सबसे बढ़िया ढंग यह देखना है कि पौलुस ने इसका

इस्तेमाल कैसे किया: ''अपराध'' और ''असफलता'' के विरुद्ध अन्तर के रूप में।

फिर से इस आयत को देखें: ''इसलिए यदि उनका *गिरना* जगत के लिए धन और उनकी *घटी* अन्यजातियों के लिए सम्पत्ति का कारण हुआ, तो उनकी *भरपूरी* से क्या कुछ न होगा!'' यहूदियों का ''गिरना'' और ''घटी'' में अपने लिए उनका परमेश्वर के उद्देश्य को ठुकराना था, जो परमेश्वर द्वारा उन्हें ठुकराने का कारण बना। ऐसा होने के अलावा, यहूदियों की ''भरपूरी'' में अवश्य ही परमेश्वर के उद्देश्य की भरपूरी होनी चाहिए, जिसका परिणाम परमेश्वर द्वारा उन्हें स्वीकार करना है। आयत 15, जो आयत 12 का समानांतर है, हमें यह स्पष्ट करने में सहायता करना है।

रोमियों 11:12		रोमियों 11:15
गिरना, घटी	परमेश्वर को ठुकराना	ठुकराया जाना (परमेश्वर द्वारा)
भरपूरी	परमेश्वर को ग्रहण किया जाना	स्वीकार किया जाना (परमेश्वर द्वारा)

11:12 का हमें एक और अवलोकन करना चाहिए। NASB में इस आयत के अन्तिम भाग को भविष्यकाल में बताया गया है: ''उनकी भरपूरी और भी कितनी अधिक होगी!'' ''होगी'' शब्द अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया है। यूनानी धर्म शास्त्र में केवल ''उनकी भरपूरी कितनी अधिक'' है (देखें KJV)। आम तौर पर जब आयत के भाग में क्रिया नहीं होती तो दी गई क्रिया आयत में वाक्य की पहली क्रियाओं से सहमत होनी चाहिए। यूनानी धर्मशास्त्र में आयत 12 में, सब क्रियाएं वर्तमानकाल में हैं। आर. सी. लैंसकी ने निष्कर्ष निकाला कि जब पौलुस ने यहूदियों को ''भरपूरी'' की बात की तो उस समय प्रेरित के मन में भविष्य की कोई घटना नहीं थी बल्कि वही था जो उस समय घटने जा रहा था:

> जो कुछ वह [पौलुस] लिखता है वह पहले से *तब* [उस समय] ... यहूदी लोगों का गिरना और घटी को संसार का अर्थात अन्यजातियों का धन माना जाए। ... [पौलुस] पूछता है, यदि ऐसा है, तो ''कितना अधिक'' यहूदियों के बचे हुए लोगों [असली इस्राएल] को उद्धार की पूर्णता मिलनी चाहिए ... इसी प्रकार संसार का, अर्थात अन्यजातियों का धन माना जाए। ...[25]

आयत 12 में पौलुस की परिभाषा कुछ अस्पष्ट हो सकती है, परन्तु उसका विचार स्पष्ट है कि यदि यहूदियों का परमेश्वर द्वारा ठुकराया जाना अन्यजातियों के परमेश्वर द्वारा ग्रहण किए जाने का कारण बना, तो कल्पना करो कि यहूदियों का परमेश्वर द्वारा ठुकराया जाना अन्यजातियों के लिए कितना अधिक लाभदायक हो सकता है (जब वे मन फिराकर उसकी ओर लौट जाएं)! एक लाभ तो यह होगा कि पतरस और पौलुस जैसे और यहूदी प्रचारक होंगे। इसका असर यह है कि यहूदियों के ग्रहण करने से और अन्यजाति मन बदलेंगे। ऊपर दिए गए चार्ट को इस प्रकार से विस्तार दिया जा सकता है:

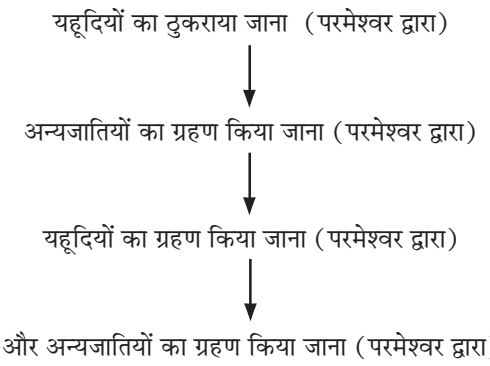

आयत 12 में इस्तेमाल किए गए ''भरपूरी'' (*pleroma*) के ढंग के साथ घटनाओं के मूल क्रम को ध्यान में रखें। आयत 25 में हम फिर *pleroma* को देखेंगे।

सारांश

एक जाति के रूप में यहूदियों ने यीशु को ठुकरा दिया था और इस कारण उन्होंने परमेश्वर को ठुकरा दिया था। परिणाम स्वरूप परमेश्वर ने उन्हें ठुकरा दिया था। क्या इसका अर्थ यह था कि परमेश्वर ने उन्हें त्याग दिया था? बिल्कुल नहीं। पौलुस तथा अन्य यहूदियों को परमेश्वर का ग्रहण करना (आयतें 1-10) किसी भी व्यक्ति को तथा हर यहूदी को जो मन फिराए और यीशु में विश्वास लाए ग्रहण किए जाने को दिखाता है। इसके अलावा इस बात के परिणाम के रूप में कि उसे अभी भी यहूदियों की चिंता है वह यहूदियों को अपने पास लौटने को उकसाने के लिए अन्यजातियों को ग्रहण कर रहा था।

हमारे लिए यह समझना आवश्यक है कि परमेश्वर पापियों को त्याग *नहीं* देता है। रोमियों 1 का अध्ययन करते हुए हमने देखा था कि परमेश्वर कई बार पापियों को उनके आज्ञा न मानने में बने रहने से अपने कामों के परिणाम भुगतने देकर, उनके पाप *पर* छोड़ देता है। कई बार इसमें परमेश्वर का उद्देश्य पापियों को उनके ढंगों की गलती दिखाना होता है इससे पहले कि बहुत देर हो जाए। परमेश्वर पापियों ''पर'' छोड़ सकता है, परन्तु वह उन पर ''त्याग'' नहीं करता। जब तक उनकी देहों में प्राण हैं, वह उनके लौटने की राह देखते हुए, उन्हें वापस आने पर ग्रहण करने को तैयार रहता है (देखें लूका 15:20-24)।[26]

यह सच्चाई कितनी ऊपर उठाने वाली है! यदि आपके प्रियजन मसीह से बाहर हैं तो इससे आपको प्रोत्साहन मिलना चाहिए। इससे आपको प्रभु के लिए उन्हें जीतने के अपने प्रयासों को दोहराने का कारण मिलना चाहिए। यदि परमेश्वर ने उन्हें नहीं त्यागा है तो हमें भी नहीं त्यागना चाहिए। यदि *आप* परमेश्वर के साथ सही नहीं हैं तो यह जानना कितना अद्भुत है कि प्रभु ने आपको नहीं त्यागा है! मेरी प्रार्थना है कि उसके प्रेम तथा धीरज से आपको आज ही उसके पास आने की प्रेरणा मिले।

टिप्पणियां

[1]यह शब्दावली सप्तति अनुवाद या LXX (पुराने नियम का यूनानी अनुवाद) से ली गई है। [2]अपने यहूदी होने की पौलुस की बात को देखने का एक और ढंग JB में है: ''मैं, एक इस्राएली, बिनियामीन के गोत्र से अब्राहम की संतान, कभी यह नहीं मान सकता था कि परमेश्वर ने अपने लोगों को ठुकरा दिया। ...'' परन्तु अधिकतर टीकाकार इस पाठ में दी गई व्याख्या से सहमत हैं। [3]*रोमियों, 3* पुस्तक में ''उसकी इच्छा के अनुसार' (8:29, 30)'' पाठ में परमेश्वर के पूर्वज्ञान पर चर्चा देखें। [4]KJV में ''wot ye not'' पुरानी अंग्रेज़ी का वाक्यांश है जिसका अर्थ है ''तुम नहीं जानते।'' [5]KJV ''Elias'' है जो ''एलिय्याह'' का यूनानी शब्द जोड़ है। [6]यूनानी धर्मशास्त्र में मूलतया ''उखाड़ दिया'' है (देखें KJV)। कुछ वेदियां मिट्टी के ढेर से बन गई थीं। [7]यदि आपके सुनने वाले पुराने नियम की इस घटना से परिचित नहीं हैं तो आपको उन्हें यह कहानी बताने के लिए समय निकालना चाहिए। [8]''बाल'' काफिर कनानी, ''देवताओं'' के लिए इस्तेमाल होने वाला पुराने नियम का शब्द था। [9]''घुटने टेकना'' पूजा और सेवा करने के लिए है। [10]''इस्राएल'' यहां इस्राएल के उत्तरी राज्य को कहा गया है।

[11]NASB वाली मेरी प्रति में लिखा है कि यूनानी शब्द के अनुवाद ''हज़ारों'' का मूल अर्थ ''लाखों'' है। [12]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ. अंगर, एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोजिस्टरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 522. [13]रोमियों 9:27 में अनुवादित शब्द ''थोड़े ही'' *hupoleimma* से लिया गया है। *Hupo* (''अधीन'') को *leimma* में बचे हुओं के कम होने पर ज़ोर देने के लिए जोड़ा गया था। [14]यदि आपके पास अनुक्रमणिका है तो आप बचे हुए शब्द को देखकर ढूंढ़ सकते हैं कि बाइबल में यह कितनी बार आया है (NASB में चौरासी बार)। यशायाह की पुस्तक पर विशेष ध्यान दें। [15]प्रकाशितवाक्य 12:17 में (KJV) ''बचे हुओं'' का अनुवाद *loipos* से किया गया है जो उसी परिवार का शब्द है जिसका *leimma* है। दोनों ही *leipo*, अर्थात **छोड़ना** से सम्बन्धित हैं (वाइन, 522)। कई बार *loipos leimma* का पर्याय होता है, परन्तु कई बार नहीं होता। प्रकाशितवाक्य 12:17 में NASB में *loipos* का अनुवाद ''शेष'' के रूप में है। [16]एफ. एफ. ब्रूस, *दि लैटर ऑफ़ पॉल टू द रोमन्स,* दि टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 201. [17]''9:18 में फिरौन का मन कठोर होने के लिए एक अलग शब्द (*sklerynō*) इस्तेमाल हुआ है; परन्तु इसका अर्थ *poroo* [11:7 में] के अर्थ से अधिक तर्क नहीं है'' (वही, n. 1)। [18]लियोन मौरिस, *दि एपिस्टल टू दि रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 361. [19]इस पुस्तक में आगे ''जाल के रूप में भोजन?'' का अतिरिक्त लेख देंखे। [20]अन्तिम पाठ ''एक सम्पूर्ण योजना–तो क्या हुआ?'' में रोमियों 10:19 पर टिप्पणियां देखें।

[21]*दि एनलेटिकल ग्रीक लैक्सिकन* (लंदन: समुएल बैगस्टर एण्ड सन्स, लि., 1971), 181. [22]वाइन, 332–33, 693. ''धुन'' के शब्द अर्थ के उदाहरण के लिए, देखें गलातियों 4:17; KJV. [23]वही, 332–33. [24]वही, 259. [25]आर. सी. एच. लैंसकी, *दि इंटरप्रेटेशन ऑफ़ पॉल'स एपिस्टल टू द रोमनस* (मिनियापुलिस: आग्सबर्ग पब्लिशिंग कं., 1963), 695. [26]दुख की बात है कि कुछ लोग मन में इतने कठोर हो जाते हैं कि ''उन्हें मन फिराव के लिए फिर बनाना अनहोना है'' (इब्रानियों 6:6)। फिर भी परमेश्वर उनकी चिंता नहीं छोड़ता (2 पतरस 3:9)।